UPTET (SUPERTET) BEST NOTES

Visit Our
YouTube Channel

Download Our App

SACHIN CHOUDHARY

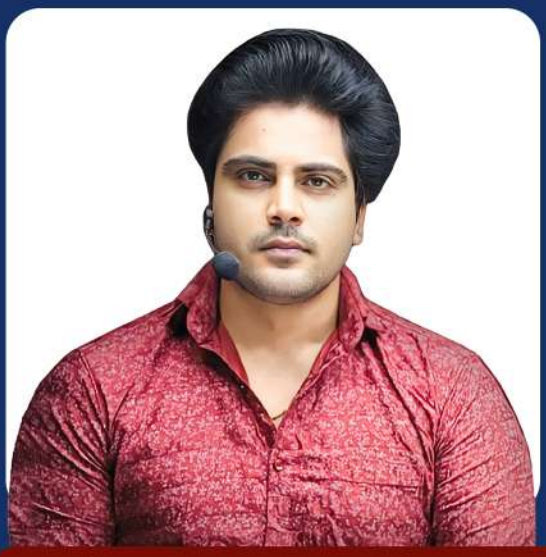

SACHIN CHOUDHARY

About the Author

In the realm of Education, there are rare individuals who not only impart knowledge but also ignite a flame of Ambition and Empowerment within their students. Sachin Choudhary sir stands tall among these luminaries, a Renowned and Experienced teacher.

He has qualified many Government Exams. Not only has he been a part of many government teaching training programs but also a guiding light for his students. Many of his students have cracked numerous Government Exams. A lot of his students are currently working in different Government Departments. As teaching is his passion, his aim has always been to provide quality education with the best content. He believes in hard work and honesty.

SACHIN ACADEMY

संस्कृत

Sanskrit

UPTET & SUPERTET BEST NOTES PAPER1 & 2 SANSKRIT BY SACHIN ACADEMY

संस्कृत शब्द रूप

राम शब्द (अकारान्त) पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः !

- इसी तरह अन्य अकारान्त पुल्लिंग शब्दों बालक, पुत्र, वृक्ष, मोहन, दिनेश, सूर्य,चन्द्र, मेघ, कन्दुक (गेंद), ग्राम, विद्यालय, शिष्य, मानव, छात्र, नर, सिंह, प्रश्न,यज्ञ आदि के रूप चलते हैं।]
- जिन शब्दों में र्, ऋ अथवा ष् होता है, उनमें तृतीया एकवचन में तथा षष्ठी बहुवचन में 'न्' के स्थान पर 'ण' हो जाता है। जैसे 'राम', 'गुरु', 'करिन्' आदि शब्दों में 'र' है अतः रामेण, गुरुणा, करिणा तृतीया में तथा रामाणाम्, गुरुणाम्, करिणाम् षष्ठी में रूप बनते हैं, किन्तु 'बालक' शब्द में र्, ऋ अथवा ष् नहीं होने के कारण 'बालकेन' तथा 'बालकानाम्' रूप बनेंगे।

रमा शब्द (आकारान्त) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रमा	रमे	रमाः
द्वितीया	रमाम्	रमे	रमाः
तृतीया	रमया	रमाभ्याम्	रमाभिः
चतुर्थी	रमायै	रमाभ्याम्	रमाभ्यः
पंचमी	रमायाः	रमाभ्याम्	रमाभ्यः

षष्ठी	रमाया:	रमयो:	रमाणाम्
सप्तमी	रमायाम्	रमयो:	रमासु
सम्बोधन	हे रमे!	हे रमे!	हे रमा: !

फल शब्द नपुंसकलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलै:
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्य:
पंचमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्य:
षष्ठी	फलस्य	फलयो:	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयो:	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

पति (इकारान्त) पुल्लिङ्ग शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम	पती	पतीन
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पंचमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतीनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	हे पते!	हे पती!	हे पतयः!

नदी शब्द (ईकारान्त) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथमा	नदी	नद्यौ	नद्यः
द्वितीया	नदीम	नद्यौ	नदीः
तृतीया	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
चतुर्थी	नद्ये	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
पंचमी	नद्याः	नदीभ्याम्	नदीभ्यः
षष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
सप्तमी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि!	हे नद्यौ!	हे नद्यः!

भानु शब्द (उकारान्त) पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः

चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

पितृ (ऋकारान्त) पुल्लिङ्ग शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
पंचमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्

सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः!	हे पितरौ!	हे पितरः!

मातृ शब्द (ऋकारान्त) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	माता	मातरौ	मातरः
द्वितीया	मातरम्	मातरौ	मातृः
तृतीया	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
चतुर्थी	मात्रे	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
पंचमी	मातुः	मातृभ्याम्	मातृभ्यः
षष्ठी	मातुः	मात्रोः	मातृणाम्
सप्तमी	मातरि	मात्रोः	मातृषु
सम्बोधन	हे मातः!	हे मातरौ!	हे मातरः।

परिवार के संस्कृत में नाम

संस्कृत	हिंदी	संस्कृत	हिंदी
पितामहः	दादा	पितृव्यपत्नी	चाची
पितामही	दादी	मातृष्वसृपतिः	मौसा
जनकः / पिता	पिता	श्वसुरः	ससुर
माता / जननी	माता	मातुलः	मामा
मातामहः	नाना	मातुली	मामी
पितृष्वसृपतिः	फूफा	श्वश्रुः	सास
पितृष्वसा	बुआ	अग्रजः	बड़ा भाई
पितृव्यः	चाचा	अग्रजा	बड़ी बहन
स्वसृ	बहन	पौत्रः	पोता
स्वसृपतिः	बहनोई	आत्मजः	पुत्र
भ्राता	भाई	आत्मजा	पुत्री

सहोदरः	सगा भाई	पुत्रवधूः	पुत्र की पत्नी
पितृव्यः-पुत्रः	चचेरा भाई	भ्रातृजाया	भाभी
अनुजः	छोटा भाई	श्यालः	साला
भ्रातृजः	भतीजा	पतिः	पति
भ्रातृजा	भतीजी	मित्रम्	मित्र

पशु-पक्षियों के संस्कृत में नाम

संस्कृत	हिंदी	संस्कृत	हिंदी
गजः	हाथी	मृगः / हरिणः	हिरन
चित्रकः / वाघः	गीता	वृकः	भेड़िया
वनमनुष्यः	वनमानुष	भल्लूकः	भालू
तरक्षुः	तेंदुआ	गण्डकः	गैंड़ा
अश्वः / घोटकः	घोड़ा	धेनुः / गौः	गाय
सिंहः	शेर	महिषः	भैंस

लोमशः	लोमड़ी	अजा	बकरी
मेषः	भेंड	सरमा	कुतिया
वृषभः / बलीवर्दः	बैल	बिडाल	बिल्ली
गर्दभः / खरः	गधा	वानरः / कपि	बन्दर
वराहः	सूअर	मूषकः	चूहा
वृषभः	साँड	चिक्रोड़ः	गिलहरी
शशकः	खरगोश	कृकलासः	गिरगिट
श्रृगालः	सियार / गीदड़	नकुलः	नेवला
श्वानः / कुक्कुरः	कुत्ता		
मयूरः	मोर	उलकः	उल्लू
शुकः / कीरः	तोता	कपोतः	कबूतर
श्येनः	बाज	काकः	कौआ
सरिकाः	मैना	कुक्कटः	मुर्गा

हंसः / मरालः	हंस	कुक्कुटी	मुर्गी
कोकिला / पिकः	कोयल	चटकाः	गौरेया
गृधः	गिद्ध	जतुका	चमगादड़
बकः	बगुला	मीनः	मछली
वर्तिका / वर्तकः	बत्तख	कच्छपः	कछुआ
सारसः	सारस	कर्कटः	केकड़ा / कलीरः
पिपीलिका	चींटी	मक्षिका	मक्खी
गृहगोदी	छिपकली		

घरेलु उपयोग की वस्तुओं के संस्कृत में नाम

संस्कृत	हिंदी	संस्कृत	हिंदी
कृषकः	किसान	शस्य	फसल
कृषका	किसान (स्त्री)	तुला	तराजू
आपनिकः	दुकानदार	उद्यानम्	बगीचा

पादपः	पौधे	द्विचक्रिका	साइकिल
आलूम्	आलू	हिंडोलकम्	झूला
मरीचम्	मिर्च	वायुलूनकम्	गुब्बारा
गृञ्जनानि	गाजर	अंतरजाल	इंटरनेट
आम्रम		आकाशवाणी	रेडियो
सेवम्	सेब	गंत्री	गाड़ी
कदलीफलम	केला	बसयान	बस
मोदकम्	लड्डू	दूरभाषः	टेलीफोन
नारिकेलम	नारियल	आसन्दिका	कुर्सी
जलम्	पानी	कंदुकम्	गेंद
सोपानम्	सीढ़ी	छतम्	छाता
क्रीडनकम्	खिलौना	संगणकम्	कंप्यूटर
उपनेत्रम्	चश्मा		

शरीर के प्रमुख अंगो के संस्कृत में नाम

संस्कृत	हिंदी	संस्कृत	हिंदी
कपालः	खोपड़ी	शिरः / शीर्ष	सिर
कपोलः	गाल	मुखः	चेहरा
कर्णः / श्रोतम्	कान	अधरम्	निचला होठ
चर्मः / त्वक	त्वचा	ओष्ठः	ऊपरी होठ
जिह्वाः / रसना	जीभ	कूर्चम्	दाढ़ी
नासिकाः	नाक	केशः / शिरोरुहः	बाल
लोचनम् / चक्षुः	आँख	चिबुकम्	थोहडी
पक्ष्मः	पलक	श्मश्रुः	मूंछ
कनीनिका	पुतली	सीमन्तम्	माँग
दन्तः / रदनः	दाँत	गात्राम्,शरीरम्	शरीर
भूः	भौंह	कंठः	गला

ललाटम् / मस्तकम्	माथा	करः/ हस्तः/ पाणिः	हाथ
करतलम्	हथेली	उरः / वक्षः	छाती
कूर्परः	कोहनी	कटिः	कमर
ग्रीवाः	गरदन	गुल्फः	टखना
पृष्ठम्	पीठ	जंघा / उरूः	जांघ
भुजः /बाहुः	भुजा	जानुः	घुटना
मणिबन्धः	कलाई	नखः	नाखून
मेरुदण्डः	रीढ़ की हड्डी	पदतलम्	तलवा
स्कन्धः	कंधा	पादः / चरणः	पैर
नाभि	नाभि	यकतः	जिगर
अंगुलिः	अंगुली	रक्तम् / रूधिरम्	खून
अंगुष्ठः	हाथ का अँगूठा	हृदयम्	हृदय
अस्थिः	हड्डी	फुप्फुसः	फेफड़ा

उदरम्	पेट	गुल्फः	टखना

सर्वनाम

"जो शब्द संज्ञा के बदले वाक्य में प्रयुक्त किए जाते है , सर्वनाम कहलाते है।" सर्वनाम का सभी नामो के लिए प्रयोग किए जा सकते है। इसलिए इसे संज्ञा का प्रतिनिधि भी कहते है जैसे- मैं, हम, तुम, आप, यह, वह, कोई, कुछ, कौन, क्या, जो, आदि।

वाक्य प्रयोग द्वारा संज्ञा का उदाहरण

- वह अब कल आएगा।
- तुम कल सवेरा ही चले जाना।

सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं-

- पुरुषवाचक सर्वनाम
- निजवाचक सर्वनाम
- निश्चयवाचक सर्वनाम
- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- संबंधवाचक सर्वनाम

पुरूषवाचक सर्वनाम

- पुरुषवाचक सर्वनाम स्त्री या पुरूष के नाम के बदले आते हैं। इसमें बोलने वाले, सुनने वाले और जिसके विषय में बात होती है, उनके लिए प्रयोग में लाए जाने वाले सर्वनाम पुरूषवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे- मैं, हम, तुम, आप, वह, वे आदि ।

पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन प्रकार है-

- उत्तम पुरूष
- मध्यम पुरुष
- अन्य पुरुष

उत्तम पुरूष :- जिन सर्वनामों का प्रयोग बोलने या लिखने वाला व्यक्ति अपने लिए करता है, उन्हें उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- मैं, हम, मेरा, मैने, हमने, हमारा, हमसे आदि । (अहम्, मम्)

उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम के उदाहरण

- मैं वहाँ जाऊँगा।
- मैंने उसका गाना सुना ।
- हमने पत्र लिखा ।
- हम चलेंगे।

मध्यम पुरुष :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग सुनने वाले के लिए किया जाता है, उन्हें मध्यम पुरूष वाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- तू, तुम, आप, तुमने, तुम्हारा, आपने, आपके (त्वम्, युयम्)

मध्यम पुरूष वाचक सर्वनाम के उदाहरण

- तुम एक अच्छे इंसान हो।
- तुम्हारे दादा जी बीमार है।
- तुमने खाना अच्छे से खाया ।

अन्य पुरूष :- जिन सर्वनाम शब्दों का प्रयोग वक्ता या श्रोता किसी अन्य व्यक्ति के लिए करता है तो उसे अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- वह, वे, यह, उस,उन ,इस, इन । (सः , सा, ते)

अन्य पुरूषवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वह पूरी रात रोती रही।
- वे कल सुबह जल्दी जाएगे।
- उन्हें बहुत बुरा लगा होगा।

निजवाचक सर्वनाम

जो सर्वनाम कर्ता के साथ अपना-पन दर्शाने के लिए किए जाते हैं, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- स्वयं, खुद, अपने आप इत्यादि। (स्वयम्)

निजवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वे खुद ही अपना काम करते है।
- उसने अपने आप दुःख दिया।

- वे कल सुबह अपने आप लौट आएंगे।

निश्चयवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध हो तो उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- यह, वह, वे आदि।

निश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- वह मेरा दोस्त है।
- यह किसान है।
- यह मेरी कार है।
- वे समोसे मत खाओ।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

जिस सर्वनाम शब्द से किसी निश्चित व्यक्ति वस्तु या घटना का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते है।

जैसे- कोई कुछ, किसी आदि।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- दरवाजे पर कोई खड़ा है।

- किसी ने उसके थप्पड़ मारा ।
- उधर से कोई गुजरा है।
- उस घर में कोई है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

जिन सर्वनाम शब्दों से किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु आदि के विषय में प्रश्न किया जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

प्रश्नवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- तुम्हारा क्या नाम है ?
- उसे कौन बुला रहा है ?
- फोन पर कौन बोल रहा है ?
- तुम क्या खा रहे हो ?

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

दो शब्दों में परस्पर सम्बन्ध का बोध कराने वाले शब्द, सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते है।

जैसे- जैसा, वैसा, जिसने, उसने, जो, सो आदि । (यः, या, यत् (जो))

सम्बन्धवाचक सर्वनाम के उदाहरण

- जैसा बोओगे, वैसा काटोगे।

- जो मेहनत करता है, वह सफल होता है।
- जैसी करनी, वैसी भरनी।

यत् (जो) पुल्लिंग शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	यः	यौ	ये
द्वितीया	यम्	यौ	यान्
तृतीया	येन	याभ्याम्	यैः
चतुर्थी	यस्मै	याभ्याम्	येभ्यः
पंचमी	यस्मात्	याभ्याम्	येभ्यः
षष्ठा	यस्य	ययोः	येषाम्
सप्तमी	यस्मिन	ययोः	येषु

यत् (जो) स्त्रीलिंग शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथमा	या	ये	याः
द्वितीया	याम्	ये	याः
तृतीया	यया	याभ्याम्	याभिः
चतुर्थी	यस्यै	याभ्याम्	याभ्यः
पंचमी	यस्याः	याभ्याम्	याभ्यः
षष्ठी	यस्याः	ययोः	यासाम्
सप्तमी	यस्याम्	ययोः	यासु

तत् (वह) शब्द पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः

पंचमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

तत् (वह) शब्द स्त्रीलिंग रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पंचमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम्
सप्तमी	तस्याम्	तयोः	तासु

किम् (कौन) पुल्लिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः
पंचमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

किम् (कौन) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः

चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पंचमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

अस्मद् (मैं) शब्द (तीनों लिंगों में समान होते है ।)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्	आवाभ्याम्	अस्मभ्यम्
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्

सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

युष्मद् (तुम) शब्द (तीनों लिंगों में समान होते है।)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्वम्	युवाम्	युयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्	युवाभ्याम्	युष्मभ्यम्
पंचमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव	युवयोः	युष्माकम्
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

सर्व (सब) शब्द पुल्लिंग रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथमा	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
द्वितीया	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान
तृतीया	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
चतुर्थी	सर्वस्मै	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
पंचमी	सर्वस्मात्	सर्वाभ्याम्	सर्वेभ्यः
षष्ठी	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
सप्तमी	सर्वस्मिन्	सर्वयोः	सर्वेषु

सर्व (सब) शब्द स्त्रीलिंग रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
द्वितीया	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
तृतीया	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
चतुर्थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः

पंचमी	सर्वस्याः	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
षष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
सप्तमी	सर्वस्याम्	सर्वयोः	सर्वासु

एतद् (यह) शब्द पुल्लिङ्ग रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषः	एतौ	एते
द्वितीया	एतम्	एतौ	एतान्
तृतीया	एतेन	एताभ्याम्	एतैः
चतुर्थी	एतस्मै	एताभ्याम्	एतेभ्यः
पंचमी	एतस्मात्	एताभ्याम्	एतेभ्यः
षष्ठी	एतस्य	एतयोः	एतेषाम्
सप्तमी	एतस्मिन्	एतयोः	एतेषु

एतद् (यह) शब्द स्त्रीलिंग रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	एषा	एते	एताः
द्वितीया	एताम्	एते	एताः
तृतीया	एतया	एताभ्याम्	एताभिः
चतुर्थी	एतस्यै	एताभ्याम्	एताभ्यः
पंचमी	एतस्याः	एताभ्याम्	एताभ्यः
षष्ठी	एतस्याः	एतयोः	एतासाम्
सप्तमी	एतस्याम्	एतयोः	एतासु

अव्यय

- जिनके रूप में लिंग , वचन, पुरुष, कारक, काल आदि की वजह से कोई परिवर्तन नहीं होता उसे अव्यय शब्द कहते हैं। अव्यय शब्द हर स्थिति में अपने मूल रूप में रहते हैं। इन शब्दों को अविकारी शब्द भी कहा जाता है। इन्हे अव्यय भी कहा जाता है।
- अव्यय पदों के अन्त में आने वाले 'र' तथा 'स्' वर्गों के स्थान पर विसर्ग होता है।
- जैसे-उच्चैस् = उच्चैः, नीचैस् = नीचैः, अन्तर् = अन्तः, पुनर् = पुनः आदि।

कुछ महत्त्वपूर्ण अव्यय शब्द एवं उनके अर्थ

अव्ययः	अर्थः	उदाहरणम्
यथा	येन प्रकारेण	सः यथा वदति तथैव करोति।
अधः	नीचे	जनः वृक्षस्य अधः तिष्ठति।
प्रातः	प्रभातकाले	सः प्रातः भ्रमणार्थं गच्छति।
नूनम्	अवश्य	सः नूनम् अत्र आगमिष्यति।
युगपत्	एक साथ	तौ युगपत् गच्छतः।
ईषत्	कुछ, थोड़ा	इदम् फलम् ईषत् कटु वर्तते।

संस्कृत संधि

- दो वर्णों के निकट आने से उनमें जो परिवर्तन होता है उसे सन्धि कहते है।
- उदाहरण - हिम + आलयः = हिमालयः
- रमा + ईशः = रमेंशः
- सूर्य + उदयः = सूर्योदयः

संस्कृत भाषा में संधि तीन प्रकार की होती है

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

1. स्वर संधि :- स्वर संधि को अच् संधि भी कहते है। दो स्वरों के मेल से होने वाले परिवर्तन को स्वर-संधि कहते हैं।

उदाहरण :-

- हिम + आलय = हिमालय।
- मही + ईश = महीश
- भानु + उदय = भानूदय
- रवि + इंद्र = रवींद्र

संस्कृत में स्वर-संधि आठ प्रकार की होती हैं

- दीर्घ संधि
- गुण संधि
- वृद्धि संधि
- यणसंधि
- अयादि संधि
- पर्वरूपसंधि
- पररुपसंधि
- प्रकृतिभावसंधि

दीर्घ संधि :- ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के बाद यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आ जाएँ तो दोनों मिलकर दीर्घ आ, ई और ऊ, ॠ हो जाते हैं। जैसे -

(क) अ/आ + अ/आ = आ

- विद्या + आलय = विद्यालय
- हिम + आलय = हिमालय
- विद्या + अर्थी = विद्यार्थी
- यथा + अर्थ : = यथार्थ

(ख) इ और ई की संधि

- परि + इक्षा = परीक्षा
- रवि + इंद्र = रवींद्र
- गिरि + ईश = गिरीश
- मुनि + इंद्र = मुनींद्र

(ग) उ और ऊ की संधि

- गुरु + उपदेश: = गुरुपदेश:
- वधू + उत्सव = वधूत्सव
- भानु + उदय = भानूदय
- लघु + ऊर्मि = लघूर्मि

गुण संधि :- अ, आ के आगे इ, ई हो तो 'ए'; उ, ऊ हो तो 'ओ' तथा ऋ हो तो 'अर्' हो जाता है। जैसे -

(क) अ, आ के आगे इ, ई हो तो 'ए' हो जाता है।

- अ + इ = ए नर + इंद्र = नरेंद्र
- अ + ई = ए नर + ईश = नरेश
- आ + इ = ए महा + इंद्र = महेंद्र
- आ + ई = ए महा + ईश = महेश

(ख) अ, आ के आगे उ, ऊ हो तो 'ओ' हो जाता है।

- अ + उ =ओ सूर्य + उदय: = सूर्योदय:
- आ + उ = ओ महा + उदय: = महोदय:
- अ + ऊ = ओ जल + ऊर्मि = जलोर्मि
- आ + ऊ = ओ महा + ऊर्मि = महोर्मि

(ग) अ, आ के आगे ऋ हो तो 'अर्' हो जाता है।

- अ + ऋ= अर् देव + ऋषि = देवर्षि
- आ + ऋ = अर् महा + ऋषि = महर्षि

वृद्धि संधि :- अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर 'ऐ' तथा अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर 'औ' हो जाता है। इसे वृद्धि संधि कहते हैं। जैसे -

(क) अ, आ का ए, ऐ से मेल होने पर 'ऐ' हो जाता है।

- अ + ए = ऐ एक + एक = एकैक
- अ + ऐ = ऐ मत + ऐक्य = मतैक्य

- आ + ए = ऐ सदा + एव = सदैव
- आ + ऐ = ऐ महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

(ख) अ, आ का ओ, औ से मेल होने पर 'औ' हो जाता है।

- अ +ओ = औ वन + औषधि = वनौषधि
- आ + ओ = औ महा + औषधि = महौषधि
- अ +औ = औ परम + औषध = परमौषध
- आ + औ = औ महा + औषध = महौषध

यण संधि

(क) इ, ई के आगे कोई विजातीय (असमान) स्वर होने पर इ ई को 'य्' हो जाता है।

- इ + आ = य् अति + आचार: = अत्याचार:
- इ + अ = य् + अ यदि + अपि = यद्यपि
- ई + आ = य् + आ इति + आदि = इत्यादि।
- ई + अ = य् + अ नदी + अर्पण = नद्यर्पण
- ई + आ = य् + आ देवी + आगमन = देव्यागमन

(ख) उ, ऊ के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर उ ऊ को 'व्' हो जाता है।

- उ + आ = व् सु + आगतम् = स्वागतम्
- उ + अ = व् + अ अनु + अय = अन्वय
- उ + आ = व् + आ सु + आगत = स्वागत
- उ + ए = व् + ए अनु +एषण = अन्वेषण

(ग) 'ऋ' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'र' हो जाता है।

- ऋ + अ = र् + आ पितृ + आज्ञा = पित्राज्ञा

(घ) 'ल' के आगे किसी विजातीय स्वर के आने पर ऋ को 'ल्' हो जाता है। इन्हें यण-संधि कहते हैं।

अयादि संधि :- इसमें ए, के स्थान पर अय्, ओ के स्थान पर अव, ऐ के स्थान पर आय्, और औ के स्थान पर आव आदेश होता है।

- ए + अ = अय् + अ ने + अन = नयन
- ऐ + अ = आय् + अ गै + अक = गायक
- ओ + अ = अव् + अ पो + अन = पवन
- औ + अ = आव् + अ पौ + अक = पावक
- औ + इ = आव् + इ नौ + इक = नाविक

पूर्वरूप संधि :- पदांत में अगर "ए" अथवा "ओ" हो और उसके परे 'अकार हो तो उस अकार का लोप हो जाता है। लोप होने पर अकार का जो चिन्ह रहता है उसे (ऽ) 'लुप्ताकार' या 'अवग्रह' कहते हैं। जैसे-

- **ए / ओ + अकार = ऽ** कवे + अवेहि = कवेऽवेहि
- **ए / ओ + अकार = ऽ** प्रभो + अनुग्रहण = प्रभोऽनुग्रहण
- **ए / ओ + अकार = ऽ** लोको + अयम् = लोकोऽयम्
- **ए / ओ + अकार = ऽ** हरे + अत्र = हरेऽत्र

पररूप संधि :- पदांत में अगर "अ" अथवा "आ" हो और उसके परे 'एकार/ओकार' हो तो उस उपसर्ग के एकार/ओकार का लोप हो जाता है। लोप होने पर अकार/ओकार 'ए/ओ' उपसर्ग में मिल जाता है। जैसे-

- प्र + एजते = प्रेजते
- उप + एषते = उपेषते
- परा + ओहति = परोहति
- प्र + ओषति = प्रोषति
- उप + एहि = उपेहि

प्रकृतिभाव संधि :- ईकारान्त, उकारान्त और एकारान्त द्विवचन रूप के बाद यदि कोइ स्वर आये तो प्रक्रति भाव हो जाता है। अर्थात् ज्यो का त्यो रहता है। जैसे-

- हरी + एतो = हरी एतो
- विष्णू + इमौ = विष्णु इम
- लते + एते = लते एते
- अमी + ईशा = अमी ईशा
- फ़ले + अवपततः = फ़ले अवपततः

2. व्यंजन संधि :- व्यंजन संधि को हल संधि भी कहते है। व्यंजन का स्वर या व्यंजन के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे व्यंजन संधि कहते है।

उदाहरण :-

- दिक् + अम्बर = दिगम्बर
- वाक् + ईश = वागीश
- अच् + अन्त = अजन्त
- षट् + आनन = षडानन
- सत् + आचार = सदाचार

व्यंजन संधि (हल् संधि) के प्रकार- ये 6 प्रकार की होती है।

- श्चुत्व सन्धि
- ष्टुत्व सन्धि
- जश्त्व सन्धि

श्श्रुत्व संधि :- जब 'स' अथवा त-वर्ग के बाद च-वर्ग आये तो संधि करते समय 'स' को "श" में, तथा त-वर्ग को च-वर्ग में बदल देते हैं। उदाहरण = सत् + चरित्र = सच्चरित्र

त वर्ग	च वर्ग
त	च्
थ्	छ्
द	ज्

ध्	झ्
न	ञ्

उदाहरण

- सद + जनः = सज्जनः
- सत् + चरित्र = सच्चरित्र
- दुस् + चरित्र = दुश्चरित्रः
- जगत् + जननी = जगज्जननी
- कस् + चित = कश्चित्
- निस् + छलः = निश्छलः
- उत् + चारणम् = उच्चारणम्
- तद् + जयः = तज्जयः
- हरिस् + शेते = हरिशेते

ष्टुत्व संधि :- जब 'स' के बाद 'ष' आए अथवा 'स' के बाद ट-वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) आए तो संधि करते समय 'स' को 'ष' में बदल देते हैं।

उदाहरण: धनुष + टकारः = धनुष्टन्कारः

अन्य उदहारण

- रमस् + षष्ठः = रामष्षष्टः
- रामस् + टीकते = रामष्टीकते
- बालास् + टीकते = बालष्टीकते
- द्रश् + तः = द्रष्टः
- उद् + ऽयम् = उडऽयम्
- महान् + डामरः = महाण्डामरः (न् +ड /ठ = ण)
- उत् + डीनः = उड्डीनः (त्/द+ठ /ड़ - ड्)
- महत् + ठालं = महड्ठालं (त् /द+ठ/ड़ = ड्)

जश्त्व संधि :- इस संधि में प्रथम पद के अंत मे वर्गों के प्रथम वर्ण आते है । तथा अंत पद के शुरू मे कोई स्वर अथवा अन्य व्यंजन आता है । तो संधि करते समय प्रथम वर्ण को उसी वर्ग के तृतीय वर्ण में बदल देते है।

उदाहरण:

- दिक् + अम्बर = दिगंबर,
- वाक् + ईशः = वागीशः

प्रथम वर्ण	तृतीय वर्ण
क	ग
च	ज
ट	ड

त	द
प	ब

जश्त्व संधि के उदाहरण

- दिक् + अम्बर = दिगंबरः
- अच् + अंतः = अजन्तः
- षट + आननः = षडाननः
- जगत् + ईशः = जगदीश :

3. विसर्ग संधि :- विसर्ग का स्वर या व्यंजन के साथ मेल होने पर जो परिवर्तन होता है, उसे विसर्ग संधि कहते है।

उदाहरण :-

- निः + चय = निश्चय
- दुः + चरित्र = दुश्चरित्र
- निः + सन्देह = निस्सन्देह
- निः + संग = निस्संग
- निः + शब्द = निश्शब्द
- निः + स्वार्थ = निस्स्वार्थ

विसर्ग संधि के प्रकार ये 4 प्रकार की होती है।

- सत्व सन्धि
- उत्व सन्धि
- रुत्व सन्धि
- लोप सन्धि

संस्कृत में गिनती (संख्याज्ञान)

संख्या	संस्कृत	संख्या	संस्कृत
0	शून्यम्	1	एकः (पुल्लिंग), एका (स्त्रीलिंग), एकम् (नपुंसकलिंग)
2	वौ, द्वे द्वे	3	त्रयः, तिस्रः, त्रीणि
4	चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि	5	पंच/पञ्च
6	षट्	7	सप्त
8	अष्ट	9	नव

10	दश	11	एकादश
12	द्वादश	13	त्रयोदश
14	चतुर्दश	15	पंचदश
16	षोडश	17	सप्तदश
18	अष्टादश	19	नवदश / ऊनविंशतिः / एकोनविंशतिः
20	विंशतिः	21	एकविंशतिः
22	द्वाविंशतिः	23	त्रिंविंशतिः
24	चतुर्विंशतिः	25	पंचविंशतिः
26	षडविंशतिः	27	सप्तविंशतिः
28	अष्टाविंशतिः	29	नवविंशतिः / एकोनत्रिंशत् / ऊनत्रिंशत्
30	त्रिंशत्	31	एकत्रिंशत्
32	द्वात्रिंशत्	33	त्रयस्त्रिंशत्

34	चतुस्त्रिंशत्	35	पञ्चत्रिंशत्
36	षट्त्रिंशत्	37	सप्तत्रिंशत्
38	अष्टत्रिंशत्	39	नवत्रिंशत् / एकोनचत्वारिंशत्
40	चत्वारिंशत्	41	एकचत्वारिंशत्
42	द्विचत्वारिंशत्	43	त्रयश्चत्वारिंशत्
44	चतुश्चत्वारिंशत्	45	पञ्चचत्वारिंशत्
46	षट्चत्वारिंशत्	47	सप्तचत्वारिंशत्
48	अष्टचत्वारिंशत्	49	नवचत्वारिंशत् / एकोनपञ्चाशत्
50	पञ्चाशत्	51	एकपञ्चाशत्
52	द्विपञ्चाशत्	53	त्रिपञ्चाशत्
54	चतुःपञ्चाशत्	55	पञ्चपञ्चाशत्
56	षट्पञ्चाशत्	57	सप्तपञ्चाशत्

58	अष्टपञ्चाशत्	59	नवपञ्चाशत् / एकोनषष्टिः
60	षष्टिः	61	एकषष्टिः
62	द्विषष्टिः	63	त्रिषष्टिः
64	चतुष्षष्टिः	65	पञ्चषष्टिः
66	षट्षष्टिः	67	सप्तषष्टिः
68	अष्टषष्टिः	69	नवषष्टिः / एकोनसप्ततिः
70	सप्ततिः	71	एकसप्ततिः
72	द्विसप्ततिः	73	त्रिसप्ततिः
74	चतुःसप्ततिः	75	पञ्चसप्ततिः
76	षट्सप्ततिः	77	सप्तसप्ततिः
78	अष्टसप्ततिः	79	नवसप्ततिः / एकोनाशीतिः
80	अशीतिः	81	एकाशीतिः
82	द्वयशीतिः	83	त्रयशीतिः

84	चतुरशीतिः	85	पञ्चशीतिः
86	षडशीतिः	87	सप्ताशीतिः
88	अष्टाशीतिः	89	नवाशीतिः / एकोननवतिः
90	नवतिः	91	एकनवतिः
92	द्विनवतिः	93	त्रिनवतिः
94	चतुर्नवतिः	95	पञ्चनवतिः
96	षष्टनवतिः	97	सप्तनवतिः
98	अष्टनवतिः	99	नवनवतिः / एकोनशतम्
100	शतम्	101	एकाधिकशतम्
1000	सहस्रम्	10,000	दशसहस्रम् / अयुतम्
1,00,000	लक्षम्	10,00,000	दशलक्षम् / नियुतम्
1 करोड़	कोटिः	10 करोड़	दशकोटिः
1 अरब	अर्बुदम्	10 अरब	दशार्बुदम्

1 खरब	खर्बम्	—	—

लिंग

संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु के पुरुषत्व या स्त्रीत्व का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं। जैसे- पति, पत्नी, रात, दिन, घोडा, घोड़ी, आदि।

लिंग के प्रकार

- पुल्लिंग
- स्त्रीलिंग
- नपुंसकलिंग

पुल्लिंग

जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है उन्हें पुल्लिंग शब्द कहते हैं जैसे: पिता, भाई, लड़का, पेड़, सिंह, शिव, हनुमान, बैल आदि।

स्त्रीलिंग

जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है उन्हें स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। जैसे: माता, बहन, यमुना, गंगा, कुरसी, छड़ी, नारी बुआ, लड़की, लक्ष्मी, गाय

नपुंसकलिंग

नपुंसकलिंग प्राय: निर्जीव पदार्थों के लिए ही प्रयुक्त होता है।

पुल्लिंग की पहचान के नियम

- जिन शब्दों के अन्त में क, ष, ण, भ, म, य, र हो, यथा-लोक, वृष, गुण, कुम्भ, धूम्र, शंकर आदि हो ।
- प, थ, न, म, ट, स के अन्त वाले शब्द, जैसे- कूपः, निशीथः, फेनः मन्यः, वायसः, पट् आदि ।
- जिन शब्दों के अन्त में अहन् अथवा अहः होते हैं, वे शब्द पुल्लिंग होते हैं, किन्तु पुष्प तथा आम्र शब्द भी नपुंसकलिंग माना जाता है।
- सुर असुरवाची शब्द सुरः देवः शिवः, दैत्य, दानवः, आदि ।
- मेघवाची - मेघ, घन, नीरदः, पयोदः, वारिवाहः बलाहकः आदि, किन्तु 'अम्र' शब्द नपुंसकलिंग में प्रयुक्त होता है।
- समुद्रवाची - अब्धिः, उदधिः सागरः, वारिधिः, सिन्धुः, अर्णवः आदि ।
- कालवाची - कालः, समयः, पक्षः, मासः आदि । (6) यत्रान्त शब्द - मध्यरात्रः, अहोरात्रः आदि।
- वसन्त व अनन्त शब्द - चन्द्रमस्, मेघस्, राजन्, आत्यन ____आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान के नियम

- एक स्वर वाले ईकारान्त एवं अकारान्त शब्द प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं, जैसे- श्रीः, धीः, भू आदि ।
- ई, अ, नि से अन्त होने वाले शब्द - जैसे अनी, तंत्री, तरी, लक्ष्मी, चमू, तनु, वधु, श्रेणी आदि ।
- विद्युत, निशा, वल्ली, वीणा, दिग्, नदी, हली वाची शब्द सदैव स्त्रीलिंग होते हैं। इति प्रत्ययान्त शब्द, जैसे- पद्मनी, फलिनि आदि। जैसे- पदमनी, फलिनि आदि।
- कवप्-प्रत्ययान्त शब्द-यथा- विद्या, शैय्या, हत्या आदि ।

- 'आप' प्रत्ययान्त शब्द, जैसे- शिवा, परीक्षा, प्रशंसा आदि ।
- विंशति से शतम् तक संख्यावाची शब्द, जैसे- विंशति, त्रिंशति, चत्वारिंशत आदि ।
- क्रिय् प्रत्यान्त शब्द, यथा-आपद, शरद आदि ।
- इन्द्र, वरुण, शर्व, भव, महिम, अरण्य, यवन एवं मातुल आदि शब्दों के आगे आनी जोड़ देने से स्त्रीलिंग बन जाते हैं। यथाइन्द्राणी, रुद्राणी, भवानी, शर्वाणी, हिमानी, यवनानी, मातुलानी आदि।

नपुंसक लिंग की पहचान के नियम

- त्व् ल्युट प्रत्यान्त शब्द नपुंसक लिंग शब्द होते हैं, यथागुरुत्वन्, महत्वम्, गमनम्, आननम्, दानम्, पतिम्, सौन्दर्यम्, माधुर्यम् आदि ।
- अस्, उस्, इस्, अन् अन्त वाले शब्द प्रायः नपुंसक लिंग होते हैं। जैसे - पर्व, हवि, कपु, चर्म, अहं आदि।
- संख्यावाची शब्द पूर्वक रात्रान्त शब्द, जैसे - द्विरात्रम् इत्यादि ।

संस्कृत वर्णमाला

संस्कृत वर्णमाला में 13 स्वर, 33 व्यंजन हैं। स्वर को 'अच्' और व्यंजन को 'हल्' कहते हैं।

वर्णों के क्रम बंद समूह को वर्णमाला कहते हैं। ये इस प्रकार हैं-

स्वर - अ आ इ ई उ ऊ ऋ ऌ ॠ ए ऐ ओ औ

व्यंजन - क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण् त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म् य् र् ल् व् श् ष् स् ह्

- मूल स्वरों की संख्या 9 है। जैसे- (अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, अं, अः)
- संयुक्त स्वर की संख्या 4 है। जैसे- (ए, ऐ, ओ, औ)

स्वर तीन प्रकार के होते है।

- **ह्रस्व स्वर :-** जिन वर्णों के उच्चारण में कम समय लगता है। उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। इनकी संख्या 5 है । (अ, इ, उ, ऋ, ऌ)
- **दीर्घ स्वर :-** जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर का दोगुना समय लगता है उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। इनकी संख्या 7 है। (आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ)
- **प्लुत स्वरः-** जिन वर्णों के उच्चारण में ह्रस्व स्वर का तीन गुना समय लगता है उसे प्लुत स्वर कहते हैं। उसके बाद 3 (३) का अंक लिख दिया जाता है। जैसे :- ओ३म् ।

व्यंजन वर्ण

जो वर्ण स्वयं उच्चारित न होकर स्वर की सहायता से हों 'व्यंजन वर्ण' या 'हल्' कहलाते हैं। इसके अन्तर्गत 33 वर्ण आते हैं- क से ह तक।

व्यंजन के प्रकार

- स्पर्श व्यंजन
- अन्तःस्थ व्यंजन
- ऊष्म व्यंजन

स्पर्श व्यंजन :- जिन वर्णो के उच्चारण में मुख के विभिन्न भागों कण्ठ, तालु, मूर्धा आदि का स्पर्श होता है, उन्हें स्पर्श व्यंजन कहते हैं। इनकी संख्या 25 होती है - क् से लेकर म् तक।

इनमे पांच वर्ग होते है - 'क' वर्ग, 'च' वर्ग, 'ट' वर्ग, 'त' वर्ग, 'प' वर्ग । ये वर्ग उच्चारण स्थान के आधार पर बने हैं।

- क वर्ग :- क् ख् ग् घ् ङ् ये पाँच व्यंजन कण्ठ से बोले जाते हैं।
- च वर्ग :- च् छ् ज् झ् ञ् ये पाँच व्यंजन तालु से बोले जाते हैं, इस वर्ग को चवर्ग कहते हैं।
- ट वर्ग :- ट, ठ, ड् ढ् ण मूर्धा से उच्चारण होने के कारण इन्हें मूर्धन्य व्यंजन कहते हैं।
- त वर्ग :- त् थ् द् ध् न् दन्त से उच्चारण होने के कारण इन्हें दन्त्य व्यंजन कहते हैं।
- प वर्ग :- प् फ् ब् भ् म् - ओष्ठ से उच्चारण होने के कारण इन्हें ओष्ठ्यवर्ण कहा जाता है।

अन्तःस्थ व्यंजन :- य् र् ल् व् ये वर्ण अन्तःस्थ व्यंजन कहलाते हैं।

ऊष्म व्यंजन :- श् ष् ल् स् ह ये चार वर्ण ऊष्म व्यंजन कहे जाते हैं।

संयुक्त व्यंजन - दो व्यंजन वर्णों के मेल से जो वर्ण बनते हैं उन्हें संयुक्त व्यंजन कहते हैं।

जैसे -

- क् + ष् + अ = क्ष
- त् + र् + अ = त्र
- ज् + ञ् + अ = ज्ञ

अयोगवाह

संस्कृत में अयोगवाह वर्णों की संख्या चार है। वाक्य में वर्णों के अतिरिक्त कुछ अन्य ध्वनि प्रतीकों का भी उपयोग किया जाता है, जो वर्णमाला में सम्मिलित न होते हुए भी अर्थबोध में सहायक होते हैं, इन्हें अयोगवाह कहा जाता है, ये इस प्रकार हैं-

- अनुस्वार अं (ं)

- विसर्ग अः (:)
- चन्द्रबिन्दु अँ ((एँ))
- चन्द्री आगत ध्वनि अॅ

संस्कृत वर्णों का उच्चारण स्थान

वर्ण	उच्चारण स्थान
अ, क्, ख, ग, घ, ङ्, ह, विसर्ग (:)	कण्ठः
इ, च्, छ, ज, झ, ञ्, य, श्	तालु
ऋ, ट, ठ, ड्, ढ्, ण, र्, ष्	मूर्धा
लु, त्, थ्, द्, ध्, न्, ल, स्	दन्ताः
उ, प, फ, ब, भ, म्, उपध्मानीयः (प फ)	ओष्ठौ
ञ्, म, ङ, ण, न्	नासिका
ए, ऐ	कण्ठतालु
ओ, औ	कण्ठोष्ठम्
व	दन्तोष्ठम

संस्कृत वचन

संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया आदि शब्दों के जिस रूप से एक या एक से अधिक संख्या का बोध होता है, उसे 'वचन' कहते हैं।

संस्कृतभाषा में तीन वचन होते हैं।

- एकवचन
- द्विवचन
- बहुवचन

एकवचन :- यदि संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रियाशब्द एक संख्या का बोध कराता है, तो वह एकवचन कहलाता है जैसे- बालकः पठति। बालिका धावति ।

द्विवचन :- जब दो संख्या का बोध कराता है, तो द्विवचन होता है। जैसे--तौ छात्रौ गच्छतः। ते बालिके पठतः ।

बहुवचन :- संज्ञा के जिस रूप से दो से अधिक संख्या का बोध कराता है, तब बहुवचन होता है। जैसे - छात्राः पठन्ति । ताः कन्याः सन्ति।

वचन के प्रयोग की विशेषताएँ-

- जाति वाचक अर्थ में एकवचन का प्रयोग होता है। कभी-कभी बहुवचन का भी प्रयोग होता है, जैसे - तथापि, सिंहः पशुरेव नान्यः । '(एकवचन),
- 'ब्राह्मणाः वेदाध्ययनं कुर्युः । ' (बहुवचन) ।

- द्वय, युग, युग्म, युगल, द्वितीय आदि शब्द द्विवचन का बोध कराने पर भी एकवचन में ही प्रयुक्त होते हैं, यथानेत्रद्वयम, पदयुगम, चरण युगलम, करयुग्यम आदि।
- एक शेष द्वन्द्व समास से बने शब्द द्वित्व बोधक होने पर भी एक पुरुष अथवा एक स्त्री के बोधक और पुल्लिंग में ही आते हैं, जैसे - पितरौ (माता-पिता), भ्रातरौ (भाई-बहिन) आदि ।
- वर्ग, गुण, समुदाय, त्रय, चतुष्टय आदि शब्द बहुत्वक बोधक होने पर भी एकवचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे छात्रगण, अध्यापक वर्ग, वेद चतुष्टयम्, गुणत्रयम् आदि । संस्कृत में कर, चरण, अक्षि, नेत्र, कर्ण शब्द हमेशा द्विवचन में प्रयुक्त होते हैं, जैसे- नेत्रे निमील्य वदति, करौ चरणौ च प्रक्षालयति ।
- संस्कृत में द्वि और उभो शब्द भी द्विवचनान्त ही होते हैं और अपने विशेष्य में लिंग वचन के अनुसार ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे वे नेत्रे, वौ, नरौ उभो, रामकृष्णौ ।
- संस्कृत में दम्पत्ति (पति-पत्नी) शब्द पुल्लिंग द्विवचन में ही आता है।
- दार (स्त्री), अक्षत (चावल), असु (प्राण) ये शब्द संस्कृत भाषा में नित्य पुल्लिंग बहुवचन में प्रयुक्त होते हैं।
- सिकता (बालक), समा (वर्ष), अय (जल), वर्षा एवं अप्सरस आदि नित्य बहुवचनान्त शब्द हैं।
- कति (कितने), यति (जितने), तति (उतने) त्यि बहुवचनान्त हैं।
- आदर सूचनार्थ शब्दों के लिए भी बहुवचन का प्रयोग होता है।

प्रत्याहार

- प्रत्याहार शब्द का अर्थ है - 'वर्णों का संक्षिप्तीकरण ।' प्रत्याहार 44 होते हैं
- माहेश्वर सूत्रों के द्वारा प्रत्याहारों का निर्माण किया जाता है ।

- सूत्र का अन्तिम हलन्त वर्ण को प्रत्याहार में नहीं लिखा जाता है।
- पहला प्रत्याहार - अण् होता है।
- माहेश्वर सूत्रों की संख्या 14 है
- ये सूत्र ही 'अष्टाध्यायी' नामक प्रसिद्ध पाणिनीय व्याकरण केआधारभूत हैं

माहेश्वर सूत्रों का विवरण

- अइउण्
- ऋलृक्
- एओ
- ऐऔच्
- हयवरट्
- लण्
- ञमङणनम्
- झभञ्
- घढधष्
- जबगडदश्
- खफछठथचटतव्
- कपय्
- शषसर्
- हल्

प्रत्याहारः	वर्णाः
अण्	अ, इ, उ
अक्	अ, इ, उ, ऋ, ऌ
इक्	इ, उ, ऋ, ऌ
उक्	उ, ऋ, ऌ
यण्	य, व, र, ल्

- यदि अण् प्रत्याहार का निर्माण करना है तो माहेश्वर सूत्र (1. अइउण) में वर्ण असे शुरू करेंगे और ण् पर समाप्त कर देंगे और अन्तिम हलन्त वर्ण को प्रत्याहार में नहीं लिखते है।
- अण् प्रत्याहार में वर्ण है - अ, इ, उ
- ऐसे ही यण् प्रत्याहार में माहेश्वर सूत्र 'हयवरट्' के य से शुरू करेंगे और 'लण्' के ण् पर समाप्त कर देंगे और अन्तिम हलन्त वर्ण (ण) को प्रत्याहार में नहीं लिखते है ।
- यण् प्रत्याहार में वर्ण है - य, व, र, ल्

अनुस्वार (•)

- अनुस्वार स्वर के बाद आने वाला व्यंजन है। इसकी ध्वनि नाक से निकलती है ।

- अनुस्वार (•) का प्रयोग पंचम वर्णो (ङ्, ञ, ण्, न्, म् - ये पंचमाक्षर कहलाते हैं) के स्थान पर किया जाता है।

अनुस्वार को पंचाक्षर में बदलने का नियम

अनुस्वार के चिह्न के प्रयोग के बाद आने वाला वर्ण जिस वर्ग का होगा अनुस्वार का चिह्न उसी वर्ग के पंचम वर्ण का स्थान लेगा तथा उसी की उच्चारण ध्वनि निकालेगा।

वर्णमाला के पाँच वर्ग

- **'क' वर्ग** **क, ख, ग, घ, ङ**
- **'च' वर्ग** **च, छ, ज, झ, ञ**
- **'ट' वर्ग** **ट, ठ, ड, ढ, ण**
- **'त' वर्ग** **त, थ, द, ध, न**
- **'प' वर्ग** **प, फ, ब, भ, म**

उदहारण-

चंचल = चञ्चल

यहाँ पर अनुस्वार (◌ं) के चिह्न के प्रयोग के बाद 'च' वर्ग का वर्ण 'च' है। अतः यहाँ अनुस्वार का चिह्न (◌ं) 'ञ' यानि 'च' वर्ग के पंचम वर्ण का उच्चारण कर रहा है।

अन्य उदहारण

- **गङ्गा- गंगा**
- **चञ्चल - चंचल**
- **झण्डा - झंडा**

- कम्पन - कंपन

अनुस्वार शब्द

संबंध, सुन्दर, संस्कृति, संपूर्ण, आनंद आदि।

अनुनासिक

अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह से अधिक तथा नाक से बहुत कम साँस निकलती है। इन स्वरों पर चन्द्रबिन्दु (ँ) का प्रयोग होता है जो की शिरोरेखा के ऊपर लगता है।

जैसे- गाँव, आँख, कुआँ, माँ, आदि।

अनुनासिक शब्द

चाँद, काँच, अँधेर, पहुँच, ऊँचाई, टाँग, पाँच, साँस, मँहगाई, आदि।

अनुस्वार और अनुनासिका में अंतर

- अनुनासिका स्वर है जबकि अनुस्वार मूलत: व्यंजन।
- अनुनासिका (चंद्रबिंदु) को परिवर्तित नहीं किया जा सकता, जबकि अनुस्वार को वर्ण में बदला जा सकता है।
- अनुनासिका का प्रयोग केवल उन शब्दों में ही किया जा सकता है जिनकी मात्राएँ शिरोरेखा से ऊपर न लगी हों। जैसे अ, आ, उ ऊ, उदाहरण के रूप में - हँस, चाँद, पूँछ
- शिरोरेखा से ऊपर लगी मात्राओं वाले शब्दों में अनुनासिका के स्थान पर अनुस्वार अर्थात बिंदु का प्रयोग ही होता है. जैसे- गोंद, कोंपल, जबकि अनुस्वार हर तरह की मात्राओं वाले शब्दों पर लगाया जा सकता है।

- अनुस्वार बिन्दु वाले शब्द में नाक का प्रयोग अधिक होता है। जबकि अनुनासिका (चंद्रबिंदु) वाले शब्द में नाक का प्रयोग काम होता है।

संस्कृत समास

- दो या दो से अधिक पदों का एक पद हो जाना, समास कहलाता है ।
- समास' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'छोटा - रूप'।

समास छः प्रकार के होते हैं-

- अव्ययीभाव समास,
- तत्पुरुष समास
- द्वन्द्व समास
- बहुब्रीहि समास
- द्विगु समास
- कर्म धारय समास

अव्ययीभाव समास :- इसमें पहला पद प्रधान होता है। इसमें पहला पद या पूरा पद अव्यय होता है। (वे शब्द जो लिंग, वचन, कारक, काल के अनुसार नहीं बदलते, उन्हें अव्यय कहते हैं)

अव्ययीभाव समास के उदाहरण

- विभक्ति
  - हरौ इति = अधिहरि (हरि में) ।
  - आत्मनि इति = अध्यात्म (आत्मा में) ।

- समीप
  - नद्या: समीपम् = उपनदम् (नदी के समीप)
  - नगरस्य समीपम् = उपनगरम् (नगर के समीप)
- समृद्धि
  - मद्राणां समृद्धि = सुमन्द्रम् (मद्रवासियों की समृद्धि)
  - भिक्षाणां वृद्धि = दुर्भिक्षम् (भिक्षा का अभाव)

तत्पुरुष समास :- इसमें उत्तरपद के अर्थ की प्रधानता रहती है। जैसे :- राज्ञ: पुरुष: - राजपुरुष: (राजा का पुरुष) । यहाँ उत्तर पद 'पुरुष:' है, उसी की प्रधानता है।

तत्पुरुष समास के प्रकार

- समानाधिकरण तत्पुरुष
- व्यधिकरण तत्पुरुष

समानाधिकरण तत्पुरुष :- इसमें पूर्वपद तथा उत्तरपद की समान विभक्ति होती है। कर्मधारण एवं द्विगु समानाधिकरण तत्पुरुष के उदहारण है।

व्यधिकरण तत्पुरुष :- व्यधिकरण तत्पुरुष के पूर्वपद द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक में होता है और उत्तरपद प्रथमा विभक्ति में। जिस विभक्ति में पूर्वपद होता है उसी नाम से तत्पुरुष कहा जाता है।

व्यधिकरण तत्पुरुष के प्रकार

- द्वितीया तत्पुरुष

- तृतीया तत्पुरुष
- चतुर्थी तत्पुरुष
- पंचमी तत्पुरुष
- षष्ठी तत्पुरुष
- सप्तमी तत्पुरुष

द्वितीया तत्पुरुष :- इसमें प्रथम पद में द्वितीया विभक्ति रहती है, जो समास होने के बाद लुप्त हो जाती है।

द्वितीया तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
जीवनप्राप्तः	जीवनम् प्राप्त	(जीवन को प्राप्त)
सुखापन्नः	सुखम् आपन्नः	(सुख को पाया हुआ)
कूपपतितः	कूपम् पतित	(कुएँ में गिरा हुआ)

तृतीया तत्पुरुष समास :- तृतीयान्त शब्द या उसके अर्थ से किये हुए गुणवाचक शब्द के साथ और अर्थ के साथ समास होता है।

यदि पहला पद कर्ता हो और तृतीया विभक्ति से युक्त हो या पहला पद करण कारक में हो और दूसरा पद कृदन्त तो इन दोनों का तृतीया तत्पुरुष समास होता है।

तृतीया तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
दानेन अर्थः	दानार्थः	दान से प्रयोजन
बाणेन बेधः	बाणवेधः	बाण से वेधा हुआ
नखैः भिन्नः	नखभिन्नः	नखों से भिन्न किया गया
गुडेन मिश्रः	गुडमिश्रः	गुड़ से मिला हुआ

चतुर्थी तत्पुरुष समास :- इस समास में पहला पद चतुर्थी विभक्ति में रहता है।

चतुर्थी तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास-विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
पित्रे सुखम	पितृसुखम्	पिता के लिए सुख

गवे रक्षितम्	गोरक्षितम्	गाय के लिए रखा गया।

पंचमी तत्पुरुष समास :- इस समास में पहला पद पंचमी विभक्ति युक्त होता है। पंचम्यन्त का भाववाचक सुबन्त के साथ विकल्प से समास होता है। यह तत्पुरुष समास कहलाता है। जैसे :-

चोरात् भयम् = चौरभयम् = चोर से भय

पंचमी तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
आचारत् भ्रष्टः	आचार भ्रष्टतः	आचारण से भ्रष्ट
प्रेतात् भीतिः	प्रेतभीतिः	प्रेत से डर
वृक्षात् पतितः	वृक्षपतितः	वृक्ष से गिरा हुआ
गृहात निर्गतः	गृहनिर्गतः	घर से निकला हुआ

षष्ठीतत्पुरुष समास :- षष्ठ्यन्त पद का सुबन्त के साथ समास होता है। और वह षष्ठी तत्पुरुष कहलाता है।

षष्ठी तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास - विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
राज्ञः पुरुषः	राजपुत्रः	राजा का पुत्र
गंगायाःजलम्	गंगाजलम्	गंगा का जल
राष्ट्रस्य पतिः	राष्ट्रपतिः	राष्ट्र का पति / स्वामी
देवानां भाषा	देवभाषा	देवभाषा

सप्तमी तत्पुरुष समास :- इसमें पूर्वपद सप्तम्यन्त रहता है। सप्तमी शौण्डैः- सप्तम्यन्त शौण्ड (चालाक / धूर्त। निपुण) आदि शब्दों के साथ सदा सप्तमी तत्पुरुष समास होता है।

सप्तमी तत्पुरुष समास के उदाहरण

समास विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
दाने वीरः	दानवीरः	दान में वीर
कर्मणि कुशलः	कर्मकुशलः	कर्म में कुशल
कलायां कुशलः	कलाकुशलः	कला में कुशल
शास्त्रे प्रवीणः	शास्त्रप्रवीणः	शास्त्र में प्रवीण

द्वन्द्व समास :- जहाँ समास में प्राय: दोनों पदों का अर्थ प्रधान होता है, वह द्वन्द्व समास कहलाता है। जहाँ पर दो या अधिक शब्दों का इस प्रकार समास हो कि उसमें च (और) अर्थ छिपा हो तो वह 'द्वन्द्व' समास होता है। द्वन्द्व समास की पहचान है कि जहाँ अर्थ करने पर बीच में 'और' अर्थ निकले।

उदहारण

- रामश्च कृष्णश्च = रामकृष्णौ (राम और कृष्ण)
- जननं च मरणं च = जननमरणौ (जन्म और मरण)
- माता च पिता च = मातापितरौ (माता और पिता)

बहुव्रीहि समास :- इस समास में न तो पूर्व पद की प्रधानता होती है और न ही उत्तर पद की, इसमें दोनों पद मिलकर अन्य पद का बोध कराते हैं। समस्त पद का प्रयोग अन्य पदार्थ के विशेषण के रूप में होता है। जैसे-

- पीतम् अम्बरं यस्य सः = पीताम्बरः (विष्णु) ।
- पीला है वस्त्र जिसका वह = पीताम्बर, अर्थात् विष्णु ।
- दशानन = दश हैं आनन जिसके (रावण)
- गजानन = गज के समान मुख वाले (गणेशजी)
- चतुर्भुज = चार हैं भुजाएं जिसकी (विष्णु)

द्विगु समास :- जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची तथा उत्तरपद संज्ञावाचक होता है, तब वह 'द्विगु समास' कहलाता यह समास प्रायः समूह अर्थ में होता है।

इसके विग्रह में षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण

- सप्तानां ऋषीणां समाहारः इति = सप्तर्षिः (सात ऋषियों का समूह)
- नवरत्न = नौ रत्नों का समूह
- नवरात्र = नौ रात्रियों का समाहार
- दशक = दश का समाहार
- शतक = सौ का समाहार

कर्मधारय समास :- कर्मधारय समास को समानाधिकरण तत्पुरुष भी कहा जाता है, क्योंकि इसमें दोनों पद समान विभक्ति वाले होते हैं। इसमें विशेषण / विशेष्य तथा उपमान / उपमेय होते हैं।

उदाहरण

समास विग्रह	समस्तपद	हिन्दी अर्थ
महान् कविः	महाकविः	महाकवि
नीलम् उत्पलम्:	नीलोत्पलम्	नीला कमल
महान् पुरुषः	महापुरुषः	महान् पुरुष

महान् जनः	कृष्णः सर्पः	बड़े आदमी
महाजनः	कृष्णसर्पः	काला साँप

उपसर्ग

वे शब्दांश जो किसी मूल शब्द के पहले लगकर नये शब्द का निर्माण करते है, उन्हें उपसर्ग कहते है। स्वतंत्र रूप से इनका कोई अर्थ नहीं होता लेकिन किसी अन्य शब्द के साथ जुड़कर ये अर्थ में विशेष परिवर्तन ला देते है।

संस्कृत में 22 उपसर्ग होते है।

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अति	अधिक / परे	अत्यन्त, अतीव, अतीन्द्रिय, अत्यधिक, अत्युत्तम
अधि	मुख्य / श्रेष्ठ	अधिकृत, अध्यक्ष, अध्यादेश, अध्ययन, अध्यापक
अनु	पीछे / समान	अनुज, अनुरूप, अन्वय, अन्वीक्षण, अनूदित, अनुच्छेद
अप	विपरीत / बुरा	अपव्यय, अपकर्ष, अपशकुन, अपेक्षा
अभि	पास / सामने	अभिभूत, अभ्युदय, अभ्यन्तर, अभ्यास, अभीष्ट

अव	बुरा / हीन	अवज्ञा, अवतार, अवकाश, अवशेष
आ	तक / से	आघात, आगार, आगम, आमोद, आतप
उत्	ऊपर / श्रेष्ठ	उज्जवल, उदय, उत्तम, उद्धार, उच्छ्वास, उल्लेख
उप	समीप	उपवन, उपेक्षा, उपाधि, उपहार, उपाध्यक्ष
दुर्	बुरा / कठिन	दुरूह, दुर्गुण, दुरवस्था, दुराशा, दुर्दशा
दुस्	बुरा / कठिन	दुष्कर, दुस्साध्य, दुस्साहस, दुश्शासन
नि	बिना / विशेष	न्यून, न्याय, न्यास, निकर, निषेध, निषिद्ध
निर्	बिना / बाहर	निरामिष, निरवलम्ब, निर्धन, नीरोग, नीरस, नीरीह
निस	बिना / बाहर	निश्छल, निष्काम, निष्फल, निस्सन्देह
प्र	आगे / अधिक	प्रयत्न, प्रारम्भ, प्रोज्जवल, प्रेत, प्राचार्य, प्रार्थी
प्रति	प्रत्येक	प्रत्येक, प्रतीक्षा, प्रत्युत्तर, प्रत्याशा, प्रतीति
वि	विशेष / भिन्न	विलय, व्यर्थ, व्यवहार, व्यायाम, व्यंजन, व्यूह
सु	अच्छा / सरल	सुगन्ध, स्वागत, स्वल्प, सूक्ति, सुलभ

सम्	पूर्ण / शुद्ध	संकल्प, संशय, संयोग, संलग्न, सन्तोष
अन्	नहीं / बुरा	अनुपम, अनन्य, अनीह, अनागत, अनुचित, अनुपयोगी
परा	पीछे / अधिक	पराक्रम, पराविद्या, परावर्तन, पराकाष्ठा
परि	चारों ओर	पर्याप्त, पर्यटन, पर्यन्त, परिमाण, परिच्छेद, पर्यावरण

प्रत्यय

प्रत्यय वे शब्द हैं जो दूसरे शब्दों के अन्त में जुड़कर अपनी प्रकृति के अनुसार, शब्द के अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।

संस्कृत प्रत्यय के प्रकार :-

- कृत प्रत्यय
- तद्धित प्रत्यय
- स्त्री प्रत्यय

कृत प्रत्यय :- वे प्रत्यय जो क्रिया या धातु के अंत में लगकर एक नए शब्द बनाते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहा जाता है। कृत प्रत्यय से मिलकर जो प्रत्यय बनते है उन्हें कृदंत प्रत्यय कहते हैं। ये प्रत्यय क्रिया और धातु को नया अर्थ देते हैं। जैसे:-

- लेख + अक = लेखक
- पाठ + अक = पाठक
- पठ + अन = पठन

तद्धित प्रत्यय :- जो प्रत्यय धातुओं को छोड़कर अन्य सभी शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) के अंत में जोड़े जाते है, तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हें तद्धितान्त (तदधितांत प्रत्यय) प्रत्यय भी कहते हैं।

तद्धित प्रत्यय के उदाहरण,

- धन + मतुप् = धनवान्,
- शिव + अण् = शैव:
- इन्द्र + अण् = ऐन्द्र

स्त्री प्रत्यय :- स्त्रीलिंग बनाने वाले प्रत्ययों को ही स्त्री प्रत्यय कहते हैं। स्त्री प्रत्यय धातुओं को छोड़कर अन्य शब्दों संज्ञा विशेषण आदि सभी के अंत में जुड़े होते हैं।

जैसे :-

- सूर्य + चाप् = सूर्या
- अज + टाप् = अजा
- कोकिल + टाप् = कोकिला
- नर्तक + डीष् = नर्तकी
- गौर + डीष् = गौरी

धातु रूप

संस्कृत व्याकरण में क्रियाओं (verbs) के मूल रूप को धातु कहते हैं। धातु ही संस्कृत शब्दों के निर्माण के लिए मूल तत्त्व है। जैसे पठ् या लिख धातु है इनसे पठति, लिखतु आदि क्रियापद बनते हैं।

क्रिया के काल इस प्रकार हैं

- जिस क्रिया से वर्तमान काल का बोध होता है, उसमें लट् लकार आता है। जैसे - छात्रः पठति (छात्र पढ़ते है) ।
- जिस क्रिया से आज्ञा देने का बोध हो उसमे लोट् लकार आता हैं। जैसे - सः पठतु (वह पढ़े), त्वम् पठ (तुम पढ़ो) आदि ।
- भूतकाल के लिए लड़ लकार आता है। इसमें धातु से पहले 'अ' जुड़कर क्रिया-पद बनता है। जैसे- सः अपठत् (उसने पढ़ा), । चाहिए', प्रार्थना या निवेदन करने के अर्थ में विधिलिङ् लकार प्रयुक्त होता है। जैसे- सः पठेत् (उसे पढ़ना चाहिए)
- सामान्य भविष्यत् काल में लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है। इसमें सेट् धातुओं में 'स्य' तथा अनिट् धातुओं में 'इस्य' लगता है। जैसे पठिष्यति, भविष्यति, दास्यामि, वक्ष्यसि आदि । सः पठिष्यति (वह पढ़ेगा) अहं पठिष्यामि आदि ।

लकार के पुरुष

प्रत्येक लकार के तीन पुरुष होते हैं-

- प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष,
- मध्यम पुरुष
- उत्तम पुरुष

प्रथम पुरुष:- जिसके विषय में कहा जाता है, वह **प्रथम पुरुष या अन्य पुरुष** होता है। जैसे- स: गच्छति (प्रथम पुरुष एकवचन), तौ पठत: (प्रथम पुरुष द्विवचन), ते लिखन्ति (प्रथम पुरुष बहुवचन) ।

मध्यम पुरुष :- जिसे सामने से कहा जाता है, वह **मध्यम पुरुष** होता है। जैसे-त्वं पठसि (मध्यम पुरुष एकवचन), युवाम् गच्छथ: (मध्यम पुरुष द्विवचन), यूयम् क्रीडथ (मध्यम पुरुष बहुवचन)।

उत्तम पुरुष:- जो कहने वाला होता है, उसे **उत्तम पुरुष** कहते हैं। जैस- अहं गच्छामि (उत्तम पुरुष एकवचन), आवाम् पठाव: (उत्तम पुरुष द्विवचन), वयम् लिखाम: (उत्तम पुरुष बहुवचन) ।

लकार

लट् लकार (वर्तमान काल) :- क्रिया के जिस रूप से कार्य का वर्तमान समय में होना पाया जाता है, उसे वर्तमान काल कहते हैं, वर्तमान काल में लट् लकार का प्रयोग होता है।

उदहारण -

राम घर जाता है - राम: गृहं गच्छति ।

- क्रिया हमेशा अपने कर्ता के अनुसार ही प्रयुक्त होती है। कर्ता जिस पुरुष, वचन तथा काल का होता है, क्रिया भी उसी पुरुष, वचन तथा काल की ही प्रयुक्त होती है।
- मध्यम पुरुष में युष्मद् शब्द (त्वम्) के रूप तथा उत्तम पुरुष में अस्मद् शब्द (अहम्) के रूप ही प्रयुक्त होते हैं। अन्य जितने भी संज्ञा या सर्वनाम के रूप हैं, वे सब प्रथम पुरुष में ही प्रयोग किये जाते हैं।

लट् लकार के कुछ उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वह पढ़ता है। (सः पठति ।)	वे दोनों पढ़ते हैं। (तौ पठतः)	वे सब पढ़ते हैं। (ते पठन्ति ।)
मध्यम पुरुष	तुम पढ़ते हो। (त्वं पठसि)	तुम दोनों पढ़ते हो। (युवां पठथः ।)	तुम सब पढ़ते हो। (यूयं पठथा)
उत्तम पुरुष	मैं पढ़ता हूँ। (अहं पठामि।)	हम दोनों पढ़ते हैं। (आवां पठावः ।)	हम सब पढ़ते हैं। (वयं पठामः ।)

- युष्मद् तथा अस्मद् के रूप स्त्रीलिंग तथा पुल्लिंग में एक समान ही होते हैं।
- वर्तमान काल की क्रिया के आगे 'स्म' जोड़ देने पर वह भूतकाल की हो जाती है,
- जैसे- रामः गच्छति । (राम जाता है), वर्तमान काल
- रामागच्छति स्म। (राम गया था) भूत काल ।

लिट् लकार (परोक्ष भूत काल) :- यह बहुत पहले हुई घटना को दिखाता है जो कार्य आँखों के सामने नहीं होता है, उसे परोक्ष भूतकाल कहते हैं।

जैसे :- वाल्मीकि ने रामायण लिखी। ईश्वर ने संसार की रचना की ।

लिट् लकार के कुछ उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	उसने पढ़ा। (सः पपाठ ।)	उन दोनो ने पढ़ा। (तौ पेठतुः ।)	उन सबने पढ़ा। (ते पेठुः ।)
मध्यम पुरुष	तुमने पढ़ा। (त्वं पेठिथ)	तुम दोनों ने पढ़ा। (युवां पेठथुः)	तुम सबने पढ़ा। (यूयं पेठ ।)
उत्तम पुरुष	मैंने पढ़ा। (अहं पपाठ ।)	हम दोनों ने पढ़ा। (आवां पेठिव ।)	हम सबने पढ़ा। (वयं पेठिम

लङ् लकार (भूत काल) :- जिससे बीते समय का बोध होता होता है उसे लङ् लकार कहते है।

लङ् लकार के उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	उसने पढ़ा। (सः अपठत् ।)	उन दोनों ने पढ़ा। (तौ अपठताम् ।)	उन सबने पढ़ा। (ते अपठन् ।)
मध्यम पुरुष	तुमने पढ़ा। (त्वम् अपठः ।)	तुम दोनों ने पढ़ा। (युवाम् अपठतम्।)	तुम सबने पढ़ा। (ते अपठन् ।)

उत्तम पुरुष	मैंने पढ़ा। (अहम् अपठम् ।)	हम दोनों ने पढ़ा। (आवाम् अपठाव ।)	हम सबने पढ़ा। (वयम् अपठाम्।)

लृट् लकार (सामान्य भविष्यत काल) :- सामान्य भविष्यत काल में 'लुट् लकार का प्रयोग किया जाता है। क्रिया के जिस रूप से उसके भविष्य में सामान्य रूप से होने का पता चले, उसे सामान्य भविष्यत काल कहते हैं; जैसे- शमा पुस्तकं पठिष्यति । (शमा पुस्तक पढ़ेगी ।)

लृट् लकार के उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वह पढ़ेगी। (सा पठिष्यति ।)	वे दोनों पढ़ेगे। (तौ/ते पठिष्यतः।)	वे सब पढ़ेंगे। (ते पठिष्यन्ति।)
मध्यम पुरुष	तुम पढ़ोगे। (त्वं पठिष्यसि ।)	तुम दोनों पढ़ोगे। (युवां पठिष्यथः ।)	तुम सब पढ़ोगे। (यूयं पठिष्यथ ।)
उत्तम पुरुष	मैं पढ़ूंगा। (अहं पठिष्यामि ।)	हम दोनों पढ़ेंगे। (आवां पठिष्यावः ।)	हम सब पढ़ेंगे। (वयं पठिष्यामः ।)

लोट् लकार (आज्ञार्थक) :- आज्ञा, अनुमति, आशीर्वाद, प्रार्थना आदि का बोध कराने के लिये लोट् लकार का प्रयोग किया जाता है। जैसे :-

- आज्ञा- त्वं गृहं गच्छ (तुम घर जाओ ।)
- अनुमति - अहं कुत्र गच्छानि ? (मैं कहाँ जाऊँ?)
- आशीर्वाद त्वं चिरंजीव । (तुम बहुत समय तक जियो।)
- प्रार्थना - भवान मम गृहं आगच्छतु । (आप मेरे घर आयें।)

लोट् लकार के उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वह पढ़े। (सः पठतु।)	वे दोनों पढ़े। (तौ पठताम् ।)	वे सब पढ़े। (ते पठन्तु ।)
मध्यम पुरुष	तुम पढ़ो। (त्वं पठ।)	तुम दोनों पढ़ो। (युवां पठतम् ।)	तुम सब पढ़ो। (यूयम् पठत।)
उत्तम पुरुष	मैं पढ़ूँ। (अहं पठानि ।)	हम दोनों पढ़े। (आवां पठाव ।)	हम सब पढ़े। (वयं पठाम ।)

विधिलिङ् लकार (चाहिए के अर्थ में) :- यह कर्तव्य को दिखता है। विधि (चाहिये), निमन्त्रण, आदेश, विधान, उपदेश, प्रश्न तथा प्रार्थना आदि अर्थों का बोध कराने के लिये विधिलिङ् लकार का प्रयोग किया जाता है; जैसे :-

- सत्यं ब्रूयात । (सत्य बोलना चाहिये),

- भवान अद्य अत्र भक्षयेत्। (आप आज यहाँ भोजन करें ।)

विधि लिङ्लकार के उदाहरण

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	उसे पढ़ना चाहिये। (सः पठेत् ।)	उन दोनों को पढ़ना चाहिये। (तौ पठेताम्	उन सबको पढना चाहिए । (ते पठेयुः ।)
मध्यम पुरुष	तुम्हें पढ़ना चाहिये। (त्वं पठे।)	तुम दोनों को पढ़ना चाहिये। (युवां पठेतम् ।)	तुम सबको पढ़ना चाहिये। (यूयं पठेत ।)
उत्तम पुरुष	मुझे पढ़ना चाहिये। (अहं पठेयम्।)	हम दोनों को पढ़ना चाहिये। (आवां पठेव् ।)	हम सबको पढ़ना चाहिये। (वयं पठेमः ।)

कारक

क्रिया को जो करता है अथवा क्रिया के साथ जिसका सीधा अथवा परम्परा से सम्बन्ध होता है, वह 'कारक' कहा जाता है।

विभक्ति :- जिसके द्वारा कारकों और संख्याओं को विभक्त किया जाता है उसे विभक्ति कहते हैं।

विभक्ति के प्रकार : विभक्तियाँ सात हैं-

- प्रथमा
- द्वितीया
- तृतीया
- चतुर्थी
- पंचमी
- षष्ठी
- सप्तमी

विभक्ति एवं कारकों का ज्ञान

कारक	चिह्न	विभक्ति
कर्ता	ने	प्रथमा
कर्म	को	द्वितीया
करण	से, द्वारा	तृतीया
सम्प्रदान	के लिए	चतुर्थी
अपादान	से (अलग होने में)	पंचमी
सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, री	षष्ठी

अधिकरण	में, पे, पर	सप्तमी
सम्बोधन	हे, ओ, अरे	प्रथमा

कर्ता कारक :- कर्ता के जिस रूप से क्रिया के करने वाले का पता चलता हो उसे कर्ता करक कहा जाता है। । कर्ता कारक का विभक्ति चिन्ह 'ने' है।

जैसे:-

- वह किताब पढता है। (सः पुस्तकम् पठति)
- राधा गीत गाती है । (राधा गीतं गायति)
- यहाँ सः और राधा कर्ता कारक है ।
- कर्ता कारक में प्रथमा विभक्ति होती है।

कर्म कारक :- वह वस्तु या व्यक्ति जिस पर वाक्य में की गयी क्रिया का प्रभाव पड़ता है वह कर्म कारक कहलाता है। अथवा वाक्य में हो रहे कार्य का फल अर्थात प्रभाव जिसपर पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं। कर्म कारक का विभक्ति चिन्ह 'को' होता है। जैसे :-

- रमेश फल खाता है (रमेशः फलम् खादति)
- मोहन दूध पिता है (मोहन दुग्धं पिबति)
- यहाँ फलम् और दुग्धं कर्म कारक है
- कर्म कारक में द्वितीया विभक्ति होती है।

करण कारक :- जिसकी सहायता से कोई कार्य किया जाए, उसे करण कारक कहते हैं। इसके विभक्ति - चिह्न 'से' 'के द्वारा है। जैसे :-

- राम ने रावण को तीर से मारा। (रामः रावणं वाणेन हतवान्)
- वह मुख से बोलता है। (सः मुखेन वदति)
- यहाँ मारने में "तीर" और बोलने में "मुख" सहायक है, इसलिए दोनों में करण कारक होगा ।
- करण कारक में तृतीया विभक्ति होती है।

सम्प्रदान कारक :- जिसके लिए कोई क्रिया या काम किया जाता हो, उसे सम्प्रदान कारक कहते है। अर्थात जिसके लिए कुछ किया जाय या जिसको कुछ दिया जाय, इसका बोध कराने वाले शब्द के रूप को सम्प्रदान कारक कहते है।

- इसकी विभक्ति चिह्न 'को' और 'के लिए है। जैसे :-
- माता बालक को लड्डू देती है। (माता बालकाय मोदकम् ददाति)
- राजा ब्राह्मण को वस्त्र देते हैं। (राजा विप्राय वस्त्रं ददाति)
- सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति होती है।

अपादान कारक :- जिस निश्चित स्थान से कोई वस्तु या व्यक्ति अलग होता है, उस निश्चित स्थान को अपादान कारक कहते हैं।

अपादान कारक का विभक्ति चिह्न " से (अलग)" होता है। जैसे :-

- वह घर से आता है। (सः गृहात् आगच्छति)
- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (वृक्षात् पत्राणि पतन्ति)

- यहाँ 'गृहात्' और 'वृक्षात्' अपादान कारक है, क्योंकि ये दोनों निश्चित स्थान है जिससे क्रमशः व्यक्ति और वस्तु अलग हो रही है।
- अपादान कारक में पंचमी विभक्ति होती है।

संबंध कारक :- शब्द के जिस रूप से एक का दूसरे से संबंध पता चले, उसे संबंध कारक कहते हैं। अथवा संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप की वजह से एक वस्तु की दूसरी वस्तु से संबंध का पता चले उसे संबंध कारक कहते हैं। इसके विभक्ति चिन्ह का, के, की, रा, रे, री आदि होते हैं। इसकी विभक्तियाँ संज्ञा, लिंग, वचन के अनुसार बदल जाती हैं। जैसे-

- यह राहुल की किताब है। - इस वाक्य में 'राहुल की ' संबंध कारक है, क्योंकि यह राहुल का किताब से संबंध बता रहा है।
- यह सोहन का बेटा है। - इस वाक्य में सोहन का बेटे से संबंध प्रकट हो रहा है। अतः यहाँ संबंध कारक है।
- सम्बन्ध करक में षष्ठी विभक्ति होती है।

अधिकरण कारक

शब्द के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसकी विभक्ति चिह्न 'में' और 'पर' होती है।

जैसे -

- पानी में मछली रहती है। - इस वाक्य में पानी में अधिकरण कारक है, भँवरा
- फूलों पर मँडरा रहा है। - इस वाक्य में फूलों पर अधिकरण कारक है।
- अधिकरण कारक में सप्तमी विभक्ति होती है।

वाच्य परिवर्तन

संस्कृत भाषा में तीन वाच्य होते हैं-

- कर्तृवाच्य,
- कर्मवाच्य
- भाववाच्य

कर्तृवाच्य :- कर्तृवाच्य में कर्ता की प्रधानता होती है, कर्तृवाच्य के कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है। इसलिए क्रिया में लिङ्ग, पुरुष व वचन कर्ता के अनुसार होता है। जैसे - रामः पुस्तकं पठति (रामः = कर्ता, पुस्तकं = कर्म, पठति = क्रिया)

- बालकः विद्यालयं गच्छति।
- बालको विद्यालयं गच्छतः।
- बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति।
- त्वं किं करोषि ?

कर्मवाच्य :- इसमें कर्म की प्रधानता होती है। अतः क्रिया में लिङ्ग, पुरुष व वचन कर्म के अनुसार होता है। कर्तृवाच्य का कर्ता कर्मवाच्य में तृतीया विभक्ति में होता है और कर्म प्रथमा विभक्ति में होता है। यहाँ सभी धातुएँ आत्मनेपद में होती हैं और बीच में 'य' जुड़ता है। जैसे- रामेण (अनुक्त कर्ता) ग्रन्थ : (उक्त कर्म) पठ्यते (क्रिया आत्मनेपदी)

- छात्रेण विद्यालयः गम्यते ।
- छात्राभ्यां पुस्तके पठ्येते ।

- अस्माभिः पद्यानि पठ्यन्ते ।

भाववाच्य :- भाववाच्य, अकर्मक धातु से बनता है। यहाँ क्रिया केवल भाव को सूचित करती है। अकर्मक धातु में कर्म नहीं रहता इसीलिए प्रथमा विभक्ति इस वाच्य में नहीं होती। इस वाच्य के कर्ता में तृतीया और क्रिया प्रथम पुरुष, एकवचन की होती है। जैसे- मया भूयते । यहाँ मया कर्ता है जो तृतीया विभक्ति से युक्त है और क्रिया प्रथमा पुरुष एकवचन की है।

वाच्य के उदाहरण

कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य

कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
रामः तं पश्यति (राम उसको देखता है)	रामेण स दृश्यते (राम के द्वारा वह देखा जाता है)
सत्वां पश्यति (वह तुमको देखता है)	तेन त्वं दृश्यते (उसके द्वारा तुम देखे जाते हो)
अहं श्लोकं पठामि	मया श्लोकः पठ्यते
मोहनः पुस्तकं पठति	मोहनेन पुस्तकं पठ्यते
कृषकः अजां नयति	कृषकेण अजा नियते
सीतया गीतः गीयते	सीता गीतं गामति

अयं बालक: पुस्तकं पठति	अनेन बालकेन पुस्तकं पठ्यते
अहं कथां पठामि	मया कथा पठ्यते
अहं कथे पठामि	मया कथे पठयेते
अहं कथा: पठामि	मया कथा: पठ्यन्ते
रमा श्लोकान् पठति	रमया श्लोका: नियते
बालका: फलानि खादन्ति	बालकै: फलानि खाद्यन्ते

कर्तृवाच्य और भाववाच्य

कर्तृवाच्य	भाववाच्य
मयूरा नृत्यन्ति (मोर नाचते हैं)	मयूरी नृत्यते (मयूरो द्वारा नाचा जाता है)
वयम् अन्नेन जीवाम: (हम अन्न पर जीते हैं)	अस्माभि: अन्नेन जीव्यते (हम लोगों द्वारा अन्न पर जीया जाता है)
विवेकिना सदा जागर्यते	विवेकी सदा जागर्ति

रात्रौ चन्द्रेण योत्यते	रात्री चन्द्रः द्योतते
ते तत्र तिष्ठन्ति	तैः तत्र स्थीयते
भवान् कुत्र शेते ?	भवता कुत्र शय्यते ?
बालिकाः खेलन्ति	बालिकैः खेल्यते

गद्यांश - श्लोकं

निम्नलिखि गद्यांश पढ़कर प्र. सं. 1 एवं 2 के उत्तर दीजिए ।

समाजे सर्वत्र दुर्जनाः पीड्यन्ति जनान् । यद्यपि सज्जनानां संख्या अधिका अस्ति तथापि दुर्जना एव प्रबलाः इति महदाश्चर्यम्। यतो हि सज्जनाः प्रायः तटस्थाः भवन्ति । यदि दुर्जनानां प्रतिपदं विरोधं सज्जनाः करिष्यन्ति तहि निश्चयेन समाजः निर्भयो भविष्यति ।

1. उपर्युक्त गद्य के अनुसार, समाज में किसकी संख्या कम है?

(a) निर्भयों की

(b) शिक्षकों की

(c) सज्जनों की

(d) दुर्जनों की

ANS: D

व्याख्याः- उपर्युक्त गद्य के अनुसार, समाज में दुर्जनों की संख्या कम है। यद्यपि सज्जनों की संख्या अधिक है, फिर भी दुर्जन ही प्रबल हैं। यह बहुत आश्चय ही

2. उपर्युक्त गद्य के अनुसार, दुष्ट लोग समाज में क्यों प्रबल दिखते हैं?

(a) क्योंकि उनकी पहुँच होती है।

(b) क्योंकि सज्जन तटस्थ रहते हैं।

(c) क्योंकि वे धनी होते हैं।

(d) क्योंकि उनकी संख्या अधिक होती है ।

ANS : B

व्याख्याः- दुष्ट लोग समाज में इसलिए प्रबल हैं, क्योंकि सज्जन तटस्थ रहते हैं।

निम्नलिखित श्लोक को पढ़िए तथा इससे सम्बद्ध प्रश्न सं . 3 एवं 4 के उत्तर दीजिए ।

महान् वृक्षो जायते वर्धते च तं चैव भूतानि समाश्रयन्ति ।

यदा वृक्षश्छिद्यते दयते च तदाश्रया अनिकेता भवन्ति ।।

3. इस श्लोक का भाव है-

(a) वृक्ष को कटाना या जलाना नहीं चाहिए।

(b) वृक्ष पर सारे प्राणी आश्रित होते हैं।

(c) वृक्ष महान् होता है।

(d) प्राणी जो वृक्ष पर आश्रित होते हैं, वृक्ष के नष्ट होने पर वे भी निराश्रित हो जाते हैं।

ANS: D

व्याख्या:- उपर्युक्त श्लोक का भाव यह है कि प्राणी जो वृक्ष पर आश्रित होते हैं, वृक्ष के नष्ट होने पर वे भी निराश्रित हो जाते हैं।

4. उपर्युक्त श्लोक में 'भूतानि' का तात्पर्य है-

(a) आश्रय

(b) प्राणी

(c) वृक्ष

(d) नाश

ANS : B

व्याख्या:- उपर्युक्त श्लोक में 'भूतानि' का तात्पर्य प्राणी है। प्राणी वृक्ष पर आश्रित होते हैं। जब वृक्ष को लोग काटना और जलाना शुरू कर देंगे, तो प्राणी निराश्रित हो जाएंगे।

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ें तथा उससे सम्बन्धित प्रश्न सं . 5 एवं 6 के उत्तर दें।

ये नामाद्वैतवादिनस्तेऽपि परमार्थतो नास्तिका एव । तेषामीश्वरस्तु कश्चिद्विलक्षण एव । जगत्कर्ताऽपि स्वयं न किमपि करोति, सर्वनियन्ताऽपि सभ्यगुदासीनस्तिष्ठति, सः सर्वतः पाणिपादोऽपि न किञ्चिद्गृह्णाति, न च पादमेकमपि गच्छति, सर्वतोऽक्षिशिरोमुखोऽपि न किञ्चिद्वदति, न कस्यापि करुणात्तप्रलापमाकर्णयति, न कस्मिंश्चिद्दयते, न कंयिश्चदुद्धरति त्रायते वा । एवमद्भुतमीश्वरमालोक्यालङ्कारिकैः खलु विरोधाभावस्याविर्भावः कृतः ।

5. गद्यखण्डेऽस्मिन् कस्य विषयस्य व्याख्यानं वर्तते ?

(a) अदवैतवादिनः

(b) आलङ्कारिकस्य

(c) परमेश्वरस्य

(d) नास्तिकस्य

Ans. (a)

व्याख्याः- इस गद्य खण्ड में अद्वैतवादियों का व्याख्यान है।

6. अद्भुतमीश्वरमालोक्य आलङ्कारिकैः कस्य अलंकारस्याविर्भावः कृतः।

(a) अतिशयोक्तेः

(b) अद्भुतस्य

(c) विरोधाभासस्य

(d) रूपकस्य

Ans. (c)

व्याख्याः- इस प्रकार के अद्भुत ईश्वर के स्वरूप को देखकर या जानकर अलंकारशास्त्रियों ने विरोधाभास अलंकार का आविर्भाव किया है।

निर्देश : निम्नलिखित गद्यावतरण को ध्यानपूर्वक पढ़कर प्रश्न संख्या 7 से 9 तक का सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

परेषाम् उपकरणमेव 'परोपकार' इति कथ्यते । परोपकरणं मानवानामेक: सात्विक: सद्गुण: स्वीकृत: । परोपकारसद्गुणेन मानवेषु सहयोग भावना वर्धते । यदि वयं परेषां जनानां उपकारं करिष्याम: तर्हि परेऽपि अस्माकं हितं विधास्यन्ति । परस्परोपकरणेनैव अस्माकं कल्याणं भवितुं शक्यते। जन-कल्याणायैव सत्पुरुष: मनसा, वाचा, कर्मणा च परोपकाररता: दृश्यन्ते । सत्पुरुषाणां सम्पत्तय: परजीवेभ्य: एव भवन्ति।

धर्मशास्त्रेषु परोपकारस्य महत्त्वं विशदरूपेण वर्णितम् । सत्परोपकारी तु स एव भवति य: स्वार्थं विहाय परेषां हितसाधने रमते । अनेकानि उदाहरणान्यपि तत्र वर्तते। महर्षि: दधीचि, रन्तिदेव या को न जानाति । प्रकृतिरपि परोपकाररता: दृश्यन्ते । नद्य: परार्थमेव जलं वहन्ति । वृक्षा: परहितायैव फलन्ति । गाव: स्वदुग्धं परेभ्य: एवं यच्छन्ति । परोपकाररूपं सद्गुणं सदैव उपार्जयेयु:। परोपकारभावनयैव अस्माकं, अस्माकं देशस्य च कल्याणं भवितुं शक्यते।

7. सत्पुरुषाणां सम्पत्तय: भवन्ति

(a) स्व-पुत्रेभ्य:

(b) स्व-मित्रेभ्य:

(c) परजीवेभ्य:

(d) स्व-वंशेभ्य:

Ans : (c)

व्याख्या:- सत्पुरुषाणां सम्पत्तय: परजीवेभ्य: भवन्ति अर्थात् सत्पुरुषों की सम्पत्तियाँ दूसरों के लिए होती है तथा दूसरों का किया गया उपकार परोपकार की श्रेणी में आता है। परोपकार को पुराणों में भी व्यक्त किया गया है ।

8. 'सदैव' पद में सन्धि है

(a) यण्

(b) वृद्धि

(c) गुण

(d) अयादि

Ans : (b)

व्याख्याः- 'सदैव' पद में वृद्धि सन्धि है। इसका विच्छेद होगा - सदा+एव।

9. परोपकारस्य महत्त्वं विशदरूपेण वर्णितम्

(a) भक्तिशास्त्रेषु

(b) धर्मशास्त्रेषु

(c) न्यायशास्त्रेषु

(d) सांख्यदर्शनेषु

Ans : (b)

व्याख्याः- परोपकारस्य महत्त्वं विशदरूपेण धर्मशास्त्रेषु वर्णितम् अर्थात् परोपकार का महत्त्व विशेष रूप से धर्मशास्त्रों में वर्णित है।